



**विलुप्त हो रही भाषाओं का
संग्रह करेंगी।**

**विलुप्त हो रही भाषाओं का
संरक्षण बहुत जरूरी !**

भाषाओं की विलुप्ति, भाषाओं का खत्म होना या यूँ कहें कि किसी भाषा विशेष की हानि हमेशा न केवल किसी देश की विरासत के लिए बल्कि पैरे मानव इतिहास के लिए एक बहुत बड़ी सांस्कृतिक क्षति या नुकसान होती है। भारत में लंबे समय तक (लगभग 200 सालों तक) औपनिवेशिक शासन रहा है। यही कारण है कि यहाँ के कानून, यहाँ के पाठ्यक्रम, यहाँ के शासन-प्रशासन पर अंग्रेजी के प्रभाव से भारतीय भाषाओं की रखीकृति अपेक्षाकृत कम हुई। आज वैश्वीकरण के कारण विश्व के कई देशों से व्यापार तथा अन्य गतिविधियों के फलस्वरूप भारतीय लगातार नई भाषाएं (जर्मन, फ्रेंच) सीख रहे हैं जिससे स्थानीय भाषाओं के प्रति उनका रुक़ान कम हो रहा है। हाल ही में एक शोध में यह बात सामने आई है कि दुनिया में आज अधी भाषाएं खतरे में हैं। कारण है कि आज हमरे बच्चे, हमारी युवा पीढ़ी अपनी मूल भाषा को नहीं सीखती। अधिनिकाता के, पाश्चात्य संस्कृति के रोग में खगोल हम अपने अपांकों अपनी संस्कृति, संस्थान, भाषा से लगातार ढूँ करते चले जा रहे हैं। भाषाएं हमारी अभियक्ति का बड़ा ही सशक्त माध्यम होती हैं और ये शब्द मात्र तक सीमित नहीं होती हैं। कोई व्यक्ति यदि भाषा के माध्यम से अपनी अभियक्ति देता है तो वह अपनी पहचान, अपनी संस्कृति, अपने परिवेश, अपने ज्ञान, अपनी आत्मा, अपने इतिहास, अपनी परंपराओं के बारे में हमें रुक़बूल करवाता है। आज के युग में भाषाओं की विलुप्ति का कारण कहीं न कहीं ग्लोबलाइजेशन भी है। ग्लोबलाइजेशन यानी वैश्वीकरण के इस दौर में पूरी दुनिया में प्रत्येक व्यक्ति बेहतर से केहतरीन होने तथा बेहतर से बेहतरीन पाने की कोशिश में लगा हुआ है और शायद यही कारण भी है कि वह बहुत सी अहम वीजों को भी आज लगातार विस्तृत करना चला जा रहा है। भाषा भी उन अहम वीजों में से एक है। आज विश्व की अनेक भाषाओं का तेजी से नए होना बेहद चिंताजनक है। यदि यही स्थितियां बनी रहीं तो "कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी" की कहानी मात्र हमारी किताबों तक सिमट कर रह जायेगी विशेषज्ञों का मानना ??है कि जब कोई भाषा मर जाती है, तो आसपास की ज्ञान प्रणाली भी मर जाती है और विलुप्त हो जाती है। वैसे, भाषाओं को बाहरी ताकतों जैसे सेन्य, अर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक अधीनता, या आंतरिक ताकतों जैसे किसी समूदाय की अपनी भाषा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण से भी कहीं न कहीं खतरा होता है। आज के समय में, अंग्रेजी और अन्य प्रमुख भाषाएं ज्ञान और रोजगार की भाषा के साथ-साथ इंटरनेट की प्राथमिक भाषा भी बन गई हैं। डिजिटल क्षेत्र की प्रमुख सामग्री अब अधिकतर अंग्रेजी भाषा में ही उपलब्ध है, और इसलिए, अन्य भाषाओं को हाशिए पर डाल दिया गया है कोई भी भाषा हमारी दैनिक सत्यता, दैनिक चर्चाओं को सारांशित अर्थ देती है। आज जनजातीय भाषाओं का संवर्द्धन व संरक्षण बहुत जरूरी है। भाषाओं का अस्तित्व व प्रसार तभी संभव है जब हम जनजातीय भाषाओं, हमारे आसपास की विभिन्न भाषाओं, देश भाषाओं का सर्वधन, संरक्षण करें। भाषाओं का संवर्द्धन, संरक्षण वास्तव में तभी संभव हो सकता है जब हम अधिक अपनी भाषा में बातचीत करें। अधिकारिक साहित्य लिखें। वास्तव में, भाषाओं की विद्या रखने के लिए हमें एक दूसरे समूदाय की भाषाओं के शब्दों को लेकिन आपस में विचार- विमर्श करना चाहिए। शब्दों को, साहित्य को, शब्दों के अर्थ आदि को जानने समझने का प्रयास करना चाहिए। इससे शब्दकोश तैयार हो सकते हैं, हमारे शब्द भंडार मजबूत हो सकते हैं। आज बोलियों की लिपि तैयार करने की दिशा में भी प्रयास किए जाने चाहिए, बोली की लिपि होगी तभी वह भाषा बनेगी। जब किसी बोली की लिपि तैयार हो जाती है तो वह भाषा बन जाती है। वैसे, बोली का साहित्य नहीं होती है तो वह भाषा नहीं हो सकती, ऐसी बात भी नहीं है। कहीं न कहीं वह भी बन जाया हो। यूएनएफपीए का इस रिपोर्ट के मुताबिक 2022 में भारत की जनसंख्या में करीब डेढ़ प्रतिशत की वृद्धि हुई है और भारत की आबादी अब चीन की कुल 142.5 करोड़ आबादी की तुलना में 142.8 करोड़ हो गई है। दुनिया की कुल आबादी अब 8.045 अरब हो चुकी है और विश्व की कुल जनसंख्या में चीन की हिस्सेदारी 1.425 अरब जबकि भारत की 1.428 अरब है और दुनिया की एक तिहाई आबादी केवल भारत और चीन इन दो देशों में ही है। कुछ महीने पहले ही यूएन द्वारा जारी किए गए वैश्विक आंकड़ों के अनुसार दुनिया की कुल आबादी 8 अरब के आंकड़े को पार कर गई थी और तभी यह अनुमान लगाया गया था कि सर्वाधिक आबादी वाले देश के मामले में भारत 2023 तक चीन को पछाड़ देगा। दुनिया की आबादी 8 अरब होने पर यूएनएफपीए ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा था, 8 अरब उम्मीदें, 8 अरब स्वप्न और 8 अरब संभावनाएं। यूएनएफपीए के मुताबिक दुनिया की आबादी सात से आठ अरब होने में केवल 12 वर्ष का समय लगा जबकि दुनिया की आबादी को 1 से 2 अरब होने में 100 साल से भी ज्यादा लगे थे। हालांकि दुनिया की आबादी तेजी से बढ़ने को संयुक्त राष्ट्र मानवता की उपलब्धियों के प्रमाण के रूप में देख रहा है और यह सही भी है कि इसमें सबसे बड़ा योगदान शिक्षा तक पहुँच का विस्तार, स्वास्थ्य देखभाल में प्रगति, लैंगिक असमानता में कमी इत्यादि कारकों का है लेकिन भारत जैसे विकासशील देशों के लिए बड़ती आबादी के खतरे भी कम नहीं हैं। विश्व की कुल आबादी में से करीब 18 फीसदी लोग अब भारत में रहते हैं और दुनिया के हर 6 नागरिकों में से एक से ज्यादा भारतीय है। अगर भारत में जनसंख्या की सघनता का स्वरूप देखें तो जहां 1991 में देश में जनसंख्या की सघनता 77 व्यक्ति प्रति

— 2 —

कौन सा है हमारा व्यावसायिक सुरक्षा आर क्या है स्वास्थ्य खतरे?

क्या आप व्यावसायिक से

स्वास्थ्य का समझने के इच्छुक हैं? यदि हाँ, तो व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा सार्वजनिक स्वास्थ्य की एक शाखा है जो कार्यस्थल की बीमारियों और चोटों के रुझानों की जांच करती है और रोकथाम के तरीकों और कानूनों की सिफारिश करती है और उन्हें लागू करती है। व्यावसायिक खतरों के सबसे प्रचलित प्रकारों में ऊँचाई, बिजली के खतरे, सुरक्षात्मक गियर की कमी, गति की चोटें, टक्कर, जैविक खतरे, रासायनिक खतरे, ऐपोनोमिक खतरे और मनोवैज्ञानिक खतरे शामिल हैं। व्यावसायिक सुरक्षा और स्वास्थ्य विभाग का उद्देश्य विभिन्न कार्यस्थलों में जोखिम को कम करना और समस्याओं की जांच करना है। व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा का क्षेत्र कार्यस्थल के खतरों के उन्मूलन, कमी या प्रतिस्थापन की मांग के लिए नियम बनाता है। औपचार्स कार्यक्रमों में कार्यस्थल की घटनाओं के परिणामों को कम करने के लिए प्रक्रियाएं और कार्यविधियां भी शामिल हैं। यह प्राथमिक चिकित्सा और भारी मशीनरी के सुरक्षित संचालन और संक्रमण की रोकथाम, ऐपोनोमिक सर्वोत्तम प्रथाओं और कार्यस्थल हिंसा प्रतिक्रिया रणनीति को कवर करता है। व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा (ओपचार्स) सार्वजनिक स्वास्थ्य का एक उपसमुच्चय है जो कार्यस्थल के स्वास्थ्य और सुरक्षा में सुधार करता है। यह कर्मचारी की चोट और बीमारी के पैटर्न की जांच करता है और काम पर आने वाले जोखिमों और खतरों को कम करने के लिए सिफारिशें करता है। प्रत्येक व्यवसाय में स्वास्थ्य और सुरक्षा जोखिम दोनों हैं - ऐपै. यह मार्गी देजे गलोक

शामिल है। एनेस्थेटिक म
एनेस्थेसियोलॉजिस्ट की ऊंच
हैं जो कार्यस्थल में रसायनों
या दीर्घकालिक स्वास्थ्य परि-
प्रतिरक्षा एजेंट, त्वचाविज्ञान
खतरनाक यौगिकों में अस्थग
मनोसामाजिक प्रकृति-मनोसा
मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभा
कार्य करने की उनकी क्षा
संरचित और प्रबंधित

नियोक्ता का उत्तरदायित्व है कि उनके
कर्मचारी यथासंभव सुरक्षित रूप से अपना
काम कर सकते हैं। व्यावसायिक खतरों के
परिणामस्वरूप कर्मचारियों के लिए
विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य समस्याएं हो
सकती हैं। भौतिक जोखिम, रासायनिक
खतरे, जैविक खतरे, एगोनैमिक खतरे
और व्यवहार संबंधी खतरे छह प्राथमिक
खतरे श्रेणियाँ हैं। व्यावसायिक खतरे वे
बीमारियाँ या दुर्घटनाएँ हैं जो काम के
दौरान हो सकती हैं। दूसरे शब्दों में,
कर्मचारियों को अपने कार्यस्थल पर जिन
जोखिमों का सामना करना पड़ता है। एक
व्यावसायिक खतरा एक नकारात्मक
अनुभव या परिणाम है जो किसी व्यक्ति को
उनके काम के परिणामस्वरूप होता है।
कुछ शब्दकोशों के अनुसार, यह शब्द उन
जोखिमों को भी संदर्भित करता है जिनका

न, ऑपरेटिंग टेबल, साइड टेबल और मॉनिटर सभी को पर सेट किया जाना चाहिए। रासायनिक खतरे ऐसे जोखिम संपर्क में आने से उत्पन्न हो सकते हैं। पीड़ितों को तत्काल आमों का अनुभव हो सकता है। सैकड़ों खतरनाक पदार्थों में ड्रेंट, कैंसरजन, न्यूरोटॉक्सिसन और प्रजनन जहर शामिल हैं। सेंसिटाइजर और प्रणालीगत जहर शामिल हैं। जोखिम कानूनिक खतरे कार्यस्थल के जोखिम हैं जिनका कर्मचारियों ने पढ़ता है। ये खतरे अन्य लोगों के साथ टीम की स्थिति में भी आ को सीमित करते हैं। जिस तरह से काम बनाया गया, किया गया वह मनोसामाजिक खतरों से जुड़ा हुआ है

प्रजनन जहर शामिल हैं। खतरनाक यौगिकों में अस्थमा, सेसिटाइजर और प्रणालीगत जहर शामिल हैं। जोखिम की मनोसामाजिक प्रकृति-मनोसामाजिक खतरे कार्यस्थल के जोखिम हैं जिनका कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है। ये खतरे अन्य लोगों के साथ टीम की स्थिति में कार्य करने की उनकी क्षमता को सीमित करते हैं। जिस तरह से काम बनाया गया, संरचित और प्रबंधित किया गया वह मनोसामाजिक खतरों से जुड़ा हुआ है। रोगियों में मनोवैज्ञानिक या मानसिक हानि या बीमारी होती है। कुछ लोग शारीरिक रूप से चोटिल या बीमार भी होते हैं। कानूनी विनियम, प्रमाणन और पंजीकरण, निगरानी और निगरानी, दुर्घटना की सूचना देना, और कार्य चोट क्षतिपूर्ति सभी कार्यस्थल सुरक्षा और स्वास्थ्य का हिस्सा हैं। कार्यस्थल सुरक्षा में सुधार के लिए अपनी जिम्मेदारियों को समझें। लोगों को उनके स्वास्थ्य और सुरक्षा के लिए कॉर्पोरेट गतिविधि के जोखिमों से बचाएं; स्रोत पर कार्यस्थल जोखिमों को समाप्त करना; और स्वास्थ्य, सुरक्षा और कल्याण मानकों के निर्माण और कार्यान्वयन में उनका प्रतिनिधित्व करने वाले नियोक्ताओं, कर्मचारियों और संगठनों को शामिल करें। काम की दुनिया में गहरा परिवर्तन हो रहा है। सरकारों, नियोक्ताओं और श्रमिकों और अन्य हितधारकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे सभी के लिए एक सुरक्षित और स्वस्थ भविष्य का कार्यस्थल बनाने के अवसरों का लाभ उठाएं। काम पर सुरक्षा और स्वास्थ्य में सुधार के उनके दिन-प्रतिदिन के प्रयास भारत के ठोस सामाजिक आर्थिक विकास में सीधे गोपातन कर सकते हैं।

आचार्य महाश्रमणः यष्टीय एकता के सत्रधार संतप्तपूरुष

ललित गर्ग

भारत की भूमि पर अनेक महापुरुषों
ने जन्म लेकर इस धरा का गौरव
बढ़ाया, उसी आलोकधर्मी परंपरा का
विस्तार है आचार्य महाश्रमण।

महावीर, बुद्ध, गांधी, आचार्य भिक्षु,
आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ
की इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए
उन्होंने स्वयं को ऊपर उठाया,
महनीय एवं कठोर साधना की,
अनुभव प्राप्त किया और अपने
अनुभव वैधव के आधार पर दुनिया
को शांति, अहिंसा, प्रेम, सौहार्द,
अयुद्ध एवं वसुधैव कुटुम्बकम् का
सन्देश दिया। अतीत की धृंघली
होती आध्यात्मिक परंपरा को
आचार्य महाश्रमण एक नई दृष्टि
प्रदान की है। यह नई दृष्टि एक नए
मनुष्य का, एक नए जगत का, एक
नए युग का सूत्रपात कही जा सकती
है। विशेषतः उनकी विनम्रता और

समर्पणभाव उनकी आध्यात्मिकता को ऊंचाई प्रदत्त रह रहे हैं। भगवान राम के प्रति हुनराम की जैसी भक्ति और समर्पण रहा है, वैसा ही समर्पण आचार्य महाश्रमण का अपने मुख आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति रहा है। 29 अप्रैल 2023 यारी वैशाख शुक्ला नवमी को आचार्य श्री महाश्रमण सूरत (गुजरात) में 62वां जन्मोत्सव मनायेगी। आचार्य महाश्रमण निरुपाधिक व्यक्तित्व का परिचायक बन गया और इस वैशिष्ट्य का राज है उनका प्रबल पुरुषार्थ, उनका समर्पण, अटल संकल्प, अखण्ड विश्वास और ध्येय निष्ठा। एम्सन ने स्टोक कहा है कि जब प्रकृति को कोई महान कार्य सम्पन्न करना होता है तो वह उसको करने के लिये एक प्रतिभा का निर्माण करती है। निश्चित ही आचार्य महाश्रमण भी

किसी महान् कार्य की निष्पत्ति के लिये ही बने हैं। ऐसे ही अनेकानेक महान् कार्यों उनके जीवन से जुड़े हैं उनमें एक विशिष्ट उपक्रम बना था अहिंसा यात्रा। आचार्य महात्रमण ने अपनी आठ वर्षीय इस ऐतिहासिक, अविस्मरणीय एवं विलक्षण यात्रा में उनीस राज्यों एवं भारत सहित तीन पड़ोसी देशों की करीब सत्र हजार किलोमीटर की पदयात्रा करते हुए अहिंसा और शांति का पैगाम फैलाया। करीब एक करोड़ लोगों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया। नेपाल में भूकम्प, कोरोना की विषम परिस्थितियों में इस यात्रा का नक्सलवादी एवं माओवादी क्षेत्रों में पहुंचना आचार्य महात्रमण के हड्ड संकल्प, मजबूत मनोबल एवं आत्मबल का परिचयक बना था। आचार्य महात्रमण का देश के सुदूर-क्षेत्रों-नेपाल एवं भूटान जैसे पडोसी

राष्ट्रों सहित आसाम, बंगाल, विह मध्यप्रदेश, उड़ीसा, कर्नाटक, तमिलनाडू, महाराष्ट्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़ आदि में अहिंसा यात्रा करना और उसमें अहिंसा पर विजय जोर दिया जाना अहिंसा की स्थान के लिये सार्थक सिद्ध हुआ है। व्याकोंकि आज देश एवं दुनिया हिंसा-एवं युद्ध के महाप्रलय से भयीभात और आतंकित है। जातीय उन्नाद सांप्रदायिक विदेश और जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं का अभाव-ऐसे कारण हैं जो हिंसा बढ़ावा दे रहे हैं और इन्हीं कारणों को नियंत्रित करने के लिए आचामन अहिंसा यात्रा के विशिष्ट अभियान के माध्यम से प्रयत्नशील बने थे। भारत की माटी में पदवात्राओं का अनूठा इतिहास रहा है। असत्य पर सत्य की विजय है। मयार्दु पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा की गई

लंका की ऐतिहासिक यात्रा हो अथवा एक मुट्ठी भर नमक से ब्रिटिश साम्राज्य हिला देने वाले 1930 का डाण्डी कूच, बाबा आमटे की भारत जोड़ी यात्रा हो अथवा राष्ट्रीय अखण्डता, साम्रादायिक सद्ग्राव और अनर्नाट्रीय भारत्व भाव से सम्पूर्ण एकता यात्रा, यात्रा के महत्व का अस्वीकार नहीं किया जा सकता भारतीय जीवन में पैदल यात्रा व जन-सम्पर्क का सशक्त माध्यम स्वीकारा गया है। ये पैदल यात्रा सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक व्यथाएँ से सीधा साक्षात्कार करती हैं। लोक चेत को उड्ढुद्ध कर उसे युगानुकूल में देती हैं। भगवान् महावीर ने अपनी जीवनकाल में अनेक प्रदेशों में विहार कर वहां के जनमानस से अध्यात्म के बीज बोये थे।

दिखावा है दिखावा

डा. सुरेश कुमार
जब मनुष्य न कहलाये तो
या मुसलमान क्या फर्क पढ़ते ?
की चौखट पर बैठने वाले
ही सही वहाँ आने वाले
न लगायेंगे। उसी तरह मन
बैठने वाले फकर मुस्लिम
हुआ, इबादत के लिए
नमाज पढ़ो न कि गले
क्या फर्क पड़ता है हिंदू
होने से ? हिंदू चाहे कितना
न कर लें और मुसलमान
भी रोजे खख लें, दानों टैक
लिए छोटी सी छोटी संभाल
हाथ-पैर मारते ही हैं, क्या
को घ्यारे हैं। हो सकता है
की भाषा संस्कृत हो ।
आयतों की भाषा अरबी तो
बच्चे पढ़ते तो अंग्रेजी
स्कूल में ही हैं ! क्या
कि भगवद्गीता की भाषा
फिर कर्ण की भाषा अ

र धर्म हिंदू हो सकता है? मंदिर खाखारी हिंदू क गले थोड़ा नजद के आगे हुए तो क्या आने वाले गति फिरें। ११ मुसलमान भी ब्रत क्यों चाहे जितने से बचने के ना के लिए इक पैसे दोनों एक के मंत्रों और दूसरे के कन दोनों के पीड़ियम के रूप पड़ता है स्कृत है या न? दोनों ही आज के चक्कावध वाल अंग्रेजों मीडियम स्कूलों में दम तोड़ती नजर आ रही हैं। मंदिर जाने वाला भक्त जिस ऊबर-खाबड़ सड़क से होकर गुजरता है उसी सड़क से कोई नमाजी नमाज अदा करने लिए मस्जिद जाता है। दोनों के गरस्त में विकास का टायर कब का पंक्तर हो गया है। दोनों ही कौमों के न जाने किनने लोग गिरकर अपने हाथ-पैर तुड़वा चुके हैं। चाहे हलवा, पूड़ी, खीर बनाना हो या फिर बिरयानी, शीरखुआ दोनों के लिए किरणा की डुकान में कमितों की सूची तो एक ही होती है। मट्ठगाई दोनों के लिए एक जैसी होती है। कोई आँखों के बीच मथ्ये पर जितना बड़ा तिलक या फिर कोई आँखों में जितना सुरमा लगा लें दोनों की आँखें मिलावट को पहचानने से धोखा खा ही जाती हैं। कोई वास्तुदेष को ध्यान में रखकर घर बनाता है तो कोई बिना वास्तु के, लेकिन क्या फर्क पड़ता है? दोनों के घर के आग मेनहाल तो खुला रहता है। बदबू दोनों को एक सी मारती है। चाहे इसे देवभूमि कह लो या फिर सारे जहाँ से अच्छा दोनों को खुली हवा में सांस लेने की आजादी कहाँ है? दोनों ही प्रदूषण के शिकार हैं। दोनों ही बिन माँगी बीमारियों के फरियादी हैं। हर दिन पवित्र गोमूर्ख पीने से न गरीबी मिटने वाली है और न ही दाढ़ी मूँछ बढ़ाने से दो जून की रोटी मिलने वाली है। जब तक वे दोनों अपना पसीना नहीं बहायेंगे तब तक उन्हें कोई मेहनताना देने के लिए तैयार नहीं है। चाहे कन्या का विवाह पूर्ण संस्कारों से हो या फिर बेटी की शादी पूरे तौर-तरीकों से। दोनों इसी चिंता में तिल-तिल जला करते हैं कि उनकी लड़की जलने या मरने से बची तो रहेगी न! बारिश के दिन अने पर दोनों ही अपने अपार्टमेंटों को कांगज की नाव की तरह नालों में डूबने से बचाने की चिंता में दिल की धड़कनों को बढ़ाते रहते हैं।

विदेश संदेश

संयुक्त राष्ट्र एजेंसी ने कहा, अफगानिस्तान को 2023 के लिए 4.62 अरब डॉलर सहायता की जरूरत

इस्लामाबाद। संयुक्त राष्ट्र की मानवीय सहायता एजेंसी ने कहा है कि अफगानिस्तान को उत्तर कीरीब 2.4 करोड़ जरूरतमंद लोगों के लिए इस साल अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से 4.62 अरब डॉलर की मानवीय सहायता की जरूरत है। संयुक्त राष्ट्र के मानवीय मामलों के समन्वय कार्यालय ने दीवट किया कि अफगानिस्तान लगातार तीसरे साल सूखा, लगातार दूसरे साल भयंकर



आधिकारिक टथा दशकों के युद्ध एवं प्राकृतिक आपदाओं के नियन्त्रण की ज़ेल रहा है। उसने कहा कि अफगानिस्तान के अधिकारियों के लिए मानवीय सहायता उनकी आखिरी जीवनरेखा बनी हुई है। काबुल के निवासी एवं सरकारी कर्मी माहमाद शुक्रन (32) ने कहा कि अफगानिस्तान में जीवन बहुत कठिन है। उन्होंने कहा कि वह व्यक्ति किसी तरह जीवित रहने का प्रयास कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एजेंसी ने इस माह के प्रारंभ में कहा था कि अफगानिस्तान के शुरुआती बाई दशक में भूखमी का सबसे अधिक खतरा मंड़ा रहा है, ऐसे में अगले छह महीने तक उसकी सहायता करने के लिए उसे 80 करोड़ डॉलर की ताकत जरूरत है।

भारत-रूस के रिश्तों पर बोले अमेरिका के पूर्व रक्षा मंत्री, कहा- हमें धैर्य दिखाना होगा

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व रक्षा मंत्री जिम मैटिस ने भारत-अमेरिका शिखर सम्मेलन के दौरान भारत और रूस के रिश्तों पर टिप्पणी की है। यह आयोजन कांगेसमल इंडिया कॉकस के सह-अध्यक्ष रो खना की ओर से आयोजित किया गया था। अमेरिका के पूर्व रक्षा मंत्री जिम मैटिस ने कहा कि युक्तन पर मास्को के हमले का समर्थन नहीं किया है, ऐसे में भारत और रूस के रिश्ते के बाच अमेरिका को रणनीतिक धैर्य दिखाना होगा। उन्होंने आगे कहा कि भारत और अमेरिका की बीच रक्षा संबंध मजबूत हो रहे हैं और तेजी से आगे भी बढ़ रहे हैं। जिम मैटिस ने कहा- हमें धैर्य दिखाना होगा। वे (भारतीय) सही दिशा में बढ़ रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत सरकार ने युक्तन पर रूस के हमले का समर्थन नहीं किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस मुद्दे पर बहुत स्पष्ट रहे हैं। भारत को जो आखिरी काम करना है वह यह है कि रूस और चीन की बीची को देखते हुए उसे चिंता की बात नहीं है। मैटिस का कहना है कि अन्य क्लाउंडेशं के विपरीत भारत ने अभी तक युक्तन पर रूसी हमलों की निंदा नहीं की है। भारत रूसी आक्रमण पर संयुक्त राष्ट्र के मंचों पर बोटों से बढ़ रहा है। भारत युक्तन में कूटनीति और बातचीत के माध्यम से युद्ध को रोकने की मार्ग कर रहा है। मैटिस का मानना है कि कोर्ट ने प्रभाव क्षेत्र के बाहर निकल रहा है। यह समय भारत पर आधारित देने का नहीं बल्कि साथ काम करने का है। एक तरफ जहां भारत के पास पड़ोसी राष्ट्र के रूप में कंड्रायनी परमाणु हथियार वाला पाकिस्तान है तो वहां दूसरी तरफ चीन है जो भारत को धमकाने की कोशिश करता रहता है।

दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति ने व्हाइट हाउस में गाना गाकर सबको चौकाया, बाइडन की प्रतिक्रिया वायरल

वाशिंगटन। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सु-क-योल आक्रमण के लिए आपात आपात हैं। इस दौरान जहां बहुत उत्तर कोरिया पर आक्रमक दिखे वहीं रात में एक अलग अंदाज में नजर आए। उनके इस अंदाज को देखकर अमेरिकी राष्ट्रपति भी ही शैतान रह गए।

यहां खाना खाने के बाद दक्षिण कोरियाई राष्ट्रपति ने अचानक से माइक ले लिया और एक अंग्रेजी गाना गाने लगे। इससे अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन चकित रह गए। दरअसल, उनकी पत्नी जिल बाइडन ने राष्ट्रपति यून और उनकी पत्नी को एक अंदाज के लिए रात्रि भूक जैसे रात्रि के बाजार को लिए चुनाव लिए थे। जिल बाइडन ने अपने उम्मीदवार उत्तरे थे, लेकिन तीनों जगह हार गई। इसी तरह संसद की सबसे बड़ी पार्टी नेपाली कांग्रेस ने दो सीटों पर चुनाव लड़ा और सियांनी नॉर्म लूईस, ली सालोना और जेसिका वोस्क गाने गा रहीं थीं। तभी दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सु-क-योल ने माइक ले लिया और अमेरिकन पार्टी का गाना गाने लगे।